बाल्यावस्था शिक्षा में आकलन

रेखा शर्मा सेन और श्रुति भार्गव

भूमिका

आकलन शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है। हममें से अधिकांश लोगों के मन में 'आकलन' शब्द से जो छवियाँ बनती हैं, वे परीक्षा कक्ष, अंकों और रिपोर्ट कार्ड, तथा बड़ों के चेहरों पर उभरने वाले असंतोष के भाव की होती हैं, क्योंकि हमारे अंक अकसर उनकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते थे। भय और असुरक्षा दो ऐसे भाव हैं जो 'आकलन' नाम के शब्द के साथ सर्वाधिक जुड़े रहते हैं। आकलन की यह तस्वीर शिक्षा के प्रति एक उत्पादोन्मुख पद्धति का नतीजा है जहाँ शिक्षा को बहुत सारे विद्यार्थियों को कुछ स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित कर दिया जाता है – कुशाग्र, औसत, मंदबुद्धि या फिर बुद्धिमान, औसत, असफल। ये ठप्पे, जो विद्यार्थियों की यात्रा में बहुत जल्दी उन्हें दे दिए जाते हैं, उसके साथ उसकी बाकी पूरी जिन्दगी चिपके रहते हैं, और शिक्षा व्यवस्था से बाहर निकल आने के बाद भी उसके कार्य करने के ढंग को प्रभावित करते रहते हैं। सशक्तीकरण की प्रक्रिया बनने के बजाय शिक्षा विद्यार्थी से उसका आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान भी छीन लेती है। और यह प्रक्रिया पूर्व–स्कूल के एकदम बाल्यावस्था से शुरू हो जाती है।

स्कूल के वर्षों को बच्चों के लिए सार्थक और आनन्ददायी बनाने के लिए जो कई चीजें करना जरूरी हैं उनमें से एक है आकलन की अवधारणा पर पुनर्विचार करना – इस प्रक्रिया में आकलन के उद्देश्य को फिर से परिभाषित करना और आकलन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों पर पुनर्विचार करना शामिल होगा।

आकलन का उद्देश्य

यदि आकलन की अवधारणा को संकुचित रूप से पेश किया जाए, तो आकलन यह पता लगाने का एक माध्यम है कि बच्चे ने क्या सीखा है और समय के एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक उसने कितनी प्रगति की है। हालाँकि किसी बच्चे की प्रगति का यह रिकार्ड आकलन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है, पर यह उसका एकमात्र उद्देश्य नहीं है।

आकलन का उतना ही महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है पाठ्यक्रम को पढ़ाने में शिक्षक की प्रभावोत्पादकता को आँकना और यह देखना कि उसके द्वारा पढ़ाने के लिए जो तरीके इस्तेमाल किए गए हैं वे उपयुक्त हैं या नहीं। कक्षा में अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के तरीकों में से एक यह पता लगाना है कि बच्चों से जो सीखने की अपेक्षा की गई थी उसे उन्होंने कितने अच्छे से सीखा है। यह अवधारणात्मक सोच सीखने के दायित्व को सिर्फ बच्चे पर डालने के बजाय बच्चे और शिक्षक, दोनों पर डालती है। न सिर्फ बच्चे को सीखना चाहिए बल्कि शिक्षक को इस ढंग से पढ़ाना चाहिए कि बच्चा सीख सके। यदि आकलन से यह संकेत मिलता है कि बच्चे ने उतने अच्छे से नहीं सीखा है जितने अच्छे से उसे सीखना चाहिए था, तो इसका निहितार्थ यह हुआ कि इसके कारणों को बच्चे के भीतर तलाशने के जितना ही, अगर ज्यादा नहीं तो, जरूरी है शिक्षक का अपने पढ़ाने के ढंग को लेकर आत्मचिन्तन करना और अध्ययन–अध्यापन के तरीकों को ज्यादा उपयुक्त बनाने की योजना बनाना।

और जब आकलन बच्चे की प्रगति निर्धारित करने के उद्देश्य से किया जा रहा हो तब भी, उसे सिर्फ किसी समय विशेष पर बच्चे के प्रदर्शन का रिकार्ड दे देने भर से आगे जाने की जरूरत है। आकलन के नतीजों को हर बच्चे की शिक्षा और विकास को सहयोग देने तथा बेहतर बनाने के लिए उपयोग किया जाना होगा। उनका इस्तेमाल हर एक बच्चे की जरूरतों के मुताबिक शिक्षण को वैयक्तिक बनाने के लिए किया जाना चाहिए। कुछ बच्चों की विशेष माँगें और जरूरतें हो सकती हैं जिन्हें विशेष उपकरणों और शिक्षण की रणनीतियों का उपयोग करके पूरा करना होगा। इस प्रकार, आकलन सिर्फ किसी समूह के प्रदर्शन का रिकार्ड भर नहीं

है। शिक्षण, सीखने और आकलन के बीच का सम्बन्ध चक्रीय है – वे एक–दूसरे को पोषित करते हैं। जब हम पढ़ाते हैं तो हमें यह आकलन करने की जरूरत होती है कि बच्चे ने क्या सीखा है। फिर आकलन से हमें पता चलता है कि बच्चे के सीखने को और बेहतर बनाने के लिए किस प्रकार हमें अपने शिक्षण को उनकी जरूरतों के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

बच्चे की शिक्षा की प्रक्रिया में उसके माता–पिता भी भागीदार होते हैं। आकलन उन्हें अपने बच्चे की प्रगति से अवगत कराने का एक माध्यम है, और साथ ही इसके द्वारा उन्हें उसके सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ताकि वे बच्चों को खुद भी घर में सिखाएँ जिससे स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा में वे भी कुछ और जोड़ सकें।

बच्चों के दृष्टिकोण से, आकलन को ऐसा होना जरूरी है जिससे उनके भीतर भय, तनाव और अयोग्यता की भावनाओं के बजाय खुद के मूल्य की, आत्मविश्वास की और उपलब्धि की भावना जगे। वह ऐसा होना चाहिए जो बच्चे को उसकी खुद की आँखों में ऊँचा उठाए और उसे आत्म–सुधार की तलाश में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहे। एक छोटा बच्चा इस विचार को स्पष्ट ढंग से व्यक्त नहीं कर सकेगा, या हो सकता है कि उसे वास्तव में इसका बोध ही न हो – लेकिन जो आकलन बच्चे के सशक्तीकरण में मदद करता है उसकी झलक रोज स्कूल जाने के लिए उसकी तत्परता में, उसकी आँखों में दिखने वाली चमक में और नए तथा चुनौतीपूर्ण कार्यों को करने की उत्सुकता में साफ दिखाई देती है ।

आकलन हर शैक्षिक कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए, उससे बच्चों को लाभ होना चाहिए, उसका उपयोग पाठ्यक्रम व पढ़ाने के ढंग में उपयुक्त बदलाव करने के लिए और किसी कार्यक्रम के महत्त्व का मूल्यांकन करने के लिए होना चाहिए।

आकलन की प्रकृति

भारतीय शिक्षा प्रणाली में पूरा जोर शैक्षिक उपलब्धियों के आकलन पर होता है। ऐसा आकलन बच्चे के पूरे व्यक्तित्व के एक अंश मात्र को महत्त्व देता है। वास्तव में तो यह तो बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमताओं का पूर्णरूपेण आकलन भी नहीं है। शिक्षा यात्रा के हर दौर में, और खासतौर पर प्रारम्भिक वर्षों में, आकलन का सरोकार बच्चे के व्यक्तित्व से जुड़े हर पक्ष (शारीरिक, अंग–संचालन, संज्ञानात्मक, भाषाई और सामाजिक–भावनात्मक) के विकास से होना चाहिए। कोई बच्चा दूसरे बच्चे द्वारा उसका खिलौना छीन लेने पर किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है, इस पर ध्यान देना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना इस पर कि क्या वह रंगों के नाम जानता है। इसके अलावा, आकलन से बच्चे की पसन्दों, नापसन्दों और रुचि के क्षेत्रों का पता लगना चाहिए। ऐसा आकलन ही समग्र आकलन होगा।

आकलन के स्वरूप को तय करते वक्त उसका केन्द्र बिन्दु बच्चे होना चाहिए, न कि शिक्षक। कागज और पेंसिल के साथ एक सीमित समय–सीमा के भीतर दी जाने वाली परीक्षाओं का संचालन और मूल्यांकन करना शायद शिक्षकों के लिए सहूलियत भरा होता है, पर ऐसी परीक्षाएँ बच्चे की क्षमताओं के विस्तार के साथ न्याय नहीं करतीं। अपने संचालन के ढंग की वजह से अकसर भयपूर्ण बना दी जाने वाली स्थिति में, बस एक दफा होने वाली आकलन प्रक्रिया शायद ही बच्चे को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित कर पाए। इसके बजाय, आकलन को एक कालखण्ड में फैला हुआ होना चाहिए ताकि बच्चे की प्रगति के सर्वांगीण रिकार्ड को दर्ज किया जा सके। इसे बच्चे के व्यक्तित्व और उसके विकास के विभिन्न आयामों पर ध्यान देना चाहिए, और हर एक बच्चे की सीखने की जरूरतों, उसकी गति तथा शैली के मुताबिक इसे वैयक्तिक आधार देना चाहिए। आकलन ऐसी सतत प्रक्रिया होना चाहिए जिसके दैनिक, तथा हर 3–4 महीनों के अन्तराल के रिकार्ड रखे जाना चाहिए।

आकलन के स्रोत, पद्धतियाँ और तकनीकें

चूँकि सीखना, बच्चे के स्कूल में बिताए जाने वाले घण्टों तक ही सीमित नहीं होता, अतः आकलन को भी बच्चे के बारे में विविध स्रोतों से हासिल जानकारियों पर आधारित होना चाहिए। जब हम आकलन के बारे में सोचते हैं तो सूचना के स्रोत के रूप में सबसे पहले शिक्षक का ध्यान आता है, लेकिन शिक्षकों के अलावा, बच्चे के माता–पिता, समुदाय के सदस्य/पड़ोस में रहने वाले लोग, बच्चे के मित्र और साथी तथा खुद बच्चा भी उसके विकास और सीखने के बारे में मूल्यवान जानकारी दे सकते हैं। जब

आकलन इन तमाम लोगों को शामिल करके किया जाता है तो हमें बच्चे के बारे में एक समग्र तस्वीर मिल जाती है।

आकलन चार पद्धतियों – व्यक्तिगत आकलन, समूह में आकलन, बच्चे द्वारा आकलन और साथियों द्वारा आकलन – में से एक के द्वारा या उनके संयोजन के द्वारा किया जा सकता है। छोटे बच्चे के मामले में, सम्भवतः आखिरी दो तरीके व्यावहारिक न हों। व्यक्तिगत आकलन के दौरान, शिक्षक एक बच्चे द्वारा किए जा रहे कार्य पर ध्यान केन्द्रित करता है और उस बच्चे की उपलब्धियों को दर्ज करता है। हम आकलन के रूप में इस तरीके से खूब परिचित हैं क्योंकि सबसे ज्यादा उपयोग किया जाने वाला तरीका यही है। सामूहिक आकलन में शिक्षक यह देखता है कि किसी कार्य को पूरा करने के लिए कुछ बच्चों का समूह कैसे एक साथ मिलकर काम करता है। जब हमें सामाजिक कौशलों, मूल्यों और प्रवृत्तियों का आकलन करना हो तो उसके लिए यह तरीका उपयुक्त है। आत्म–आकलन के दौरान बच्चा अपनी प्रगति की जानकारी देता है, जबकि साथियों द्वारा आकलन करने पर दूसरे बच्चे उसकी क्षमताओं, रुचियों और उसके ज्ञान के बारे में अपनी जानकारी देते हैं।

आकलन के लिए स्कूलों में इस्तेमाल की जाने वाली सबसे आम तकनीक है कागज और पेंसिल के साथ किए जाने काम और मौखिक परीक्षाएँ। ये तरीके बहुत छोटे बच्चों के साथ भी उपयोग किए जाते हैं। कई नर्सरी स्कूलों में बच्चे लिखित परीक्षाएँ देते हैं जिसमें उन्हें 'A से Z' तक या '1 से 20' तक लिखना होता है। मौखिक परीक्षा में कोई कविता, या वर्णमाला या फिर संख्याओं को बोलकर सुनाना होता है। इस पद्धति में कई खामियाँ होती हैं, खासतौर पर तब जब इसे छोटे बच्चों के आकलन के लिए इस्तेमाल किया जा रहा हो। परीक्षा जैसा वातावरण एक कृत्रिम माहौल बना देता है, जिससे बच्चे में घबराहट पैदा हो जाती है जो उसके प्रदर्शन पर बुरा असर डाल सकती है। ऐसा आकलन बच्चों के अनुकूल नहीं है। खासतौर से छोटे बच्चे के सीखने और उसके विकास का आकलन करने के लिए यह पसन्दीदा विकल्प नहीं है। इसके बजाय, बच्चों को उनके स्वाभाविक वातावरण में अपनी रोजमर्रा की गतिविधियाँ करते हुए देखने से, और बच्चों द्वारा कक्षा में या घर पर किए जाने वाले रोज के कार्य, जैसे उनके द्वारा बनाए गए चित्रों या चीजों (जैसे मिट्टी की बनाई गई चीजों) की समीक्षा करने से, बच्चे के बारे में कहीं ज्यादा समग्र जानकारी मिलती है। जब बच्चे का आकलन करने के लिए ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है तो हमें बच्चे के स्वाभाविक विकास की झलक देखने को मिलती है। एक बार ली जाने वाली परीक्षाओं की तुलना में शिक्षकों के अवलोकन और पोर्टफोलिओ (कार्यों की फाइल) पद्धति कम हस्तक्षेप करने वाली और ज्यादा व्यापक दायरे वाली है। यह जरूरी है कि आकलन प्रामाणिक हो, बच्चे के व्यक्तित्व के हर पहलू को समेटने वाला हो, निरन्तर चलने वाला हो और विविध तरीके इस्तेमाल करता हो।

अवलोकन : एक महत्त्वपूर्ण सहायक पद्धति

बच्चों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने का सबसे सामान्य तरीका है उन्हें देखना और सुनना। सभी शिक्षक उन बच्चों का अवलोकन करते हैं जिनके साथ वे काम करते हैं। ये अवलोकन अनौपचारिक हो सकते हैं या सहज प्रवृत्त हो सकते हैं या व्यवस्थित, सुनियोजित और विषय–केन्द्रित हो सकते हैं। बच्चों का अवलोकन करने के कई तरीके हैं जो प्रामाणिक और सार्थक जानकारियाँ इकट्ठी करने में मदद करते हैं।

आकलन की एक पद्धति के रूप में अवलोकन कई उद्देश्य पूरे करता है –

- शिक्षकों को बच्चों की रुचियाँ पहचानने में मदद मिलती है जिससे शिक्षक ऐसे शैक्षिक अनुभवों की योजना बना सकते हैं जो बच्चों की रुचियों के अनुरूप हों, और इस प्रकार हो सकता है कि वे उनके व्यापक रूप से सीखने को प्रेरित करें।
- सीखने के हर पहलू में हर बच्चे के विकास के स्तर को पहचानने में मदद मिलती है – किसी समूह के बच्चे विकास के अलग–अलग क्षेत्रों में विभिन्न स्तरों पर होते हैं। अलग–अलग समय और अलग–अलग माहौल में अवलोकन की अलग–अलग तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए किए गए अवलोकनों में हर बच्चे के विकास की एक समग्र तस्वीर देने की सम्भावना होती है। यह जानकारी शिक्षक को अपने शिक्षण के तथा बच्चों की देखरेख के तरीके को अलग–अलग बच्चे के मुताबिक बनाने में मदद करेगी।
- समय–समय पर होने वाले अवलोकन बच्चों की प्रगति की जानकारी रखने में मदद करते हैं – अवलोकनों का एक व्यवस्थित कार्यक्रम बच्चे या बच्चों के व्यवहार में आने वाले बदलावों को लिखित रूप से दर्ज करने में मदद करता है।

- अवलोकन शिक्षकों के लिए उनकी खुद की शिक्षण प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने की एक प्रभावी तकनीक है, और यह उन्हें अपने शिक्षक–दल के सशक्त और कमजोर पहलुओं के बारे में गहरी समझ प्रदान कर सकता है। इससे उन्हें अपने पेशेवर विकास के लिए कार्यक्रमों की योजना बनाने में मदद मिलती है।
- अवलोकन सामान्य कार्यक्रम के लिए भी और कक्षा में सामने आने वाले खास मसलों के बारे में भी गहरी समझ पैदा करता है। माता–पिता और प्रशासकों के साथ बाँटी जाने वाली जानकारी में प्रत्येक बच्चे के बारे में लिखित अवलोकन भी जोड़े जा सकते हैं।

बाल्यावस्था के परिवेश में अवलोकन कैसे किए जाएँ

जब पर्यवेक्षक किसी भी परिवेश में प्रवेश करते हैं तो उनकी उपस्थिति मात्र से वहाँ सामान्य रूप से चल रही गतिविधि में बदलाव आ जाता है। छोटे बच्चे काफी जल्दी खुद को नए परिवेश में ढाल लेते हैं और यदि उनके सामने कोई परिचित व्यक्ति हो तो वे अपने सामान्य व्यवहार पर लौट आते हैं और पर्यवेक्षक को अनदेखा कर देते हैं। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि अवलोकन की स्थिति में हम दखलन्दाजी करने से बचें। यह तभी सम्भव है जब –

- अवलोकन की योजना पहले से बना ली गई हो,
- अवलोकन के अलग–अलग तरीके ज्ञात हों और स्थिति विशेष के लिए उसके उपयुक्त तरीके इस्तेमाल किए जाएँ,
- अवलोकन के लक्ष्यों और जरूरी जानकारी की प्रकृति के बारे में दृष्टि बिलकुल साफ हो,
- एक कार्यक्रम बना लिया गया हो कि कब किसका अवलोकन करना है,
- रिकार्डर, विराम घड़ी, टेप रिकार्डर, कैमरा, वीडियो कैमरा आदि सामान उपलब्ध हों,
- पर्यवेक्षक ऐसी जगह तलाश कर ले जहाँ से बच्चों की गतिविधि में कोई दखल न पड़े। ऐसी जगह चुनें जहाँ से पूरा नजारा दिखता हो और हर बात सुनाई देती हो पर आप जिस बात का अवलोकन करने आए हों उसमें दखल न पड़ता हो।
- अवलोकन करते और आँकड़ों को दर्ज करते वक्त, जितना हो सके तटस्थ रहने की कोशिश करें। अपने फैसलों, निष्कर्षों और बातों के अर्थ की अन्य व्याख्याओं को अवलोकन होने तक एक तरफ रख दें। बच्चे के किसी खास आचरण, खास स्थिति, और सम्बन्धित लक्ष्य के अवलोकन पर ध्यान केन्द्रित करें – हर चीज को एक ही बार में देख लेना सम्भव नहीं होता। अवलोकन के सन्दर्भ को दर्ज करें और मौखिक तथा अमौखिक, दोनों तरह के व्यवहारों का अवलोकन करें।

छोटे बच्चों के अवलोकनों को दर्ज करने के तरीके

अवलोकनों को हाथ से दर्ज करना या टेप रिकार्डर से रिकार्ड करना जरूरी होता है ताकि कोई भी जानकारी न छूट पाए। सिर्फ बच्चों को देखते रहना काफी नहीं है, जो कुछ भी देखा जा रहा हो उसे दर्ज करने के कुछ तरीके होना चाहिए। जो भी देखा गया हो उसे याद रखना और उसका विश्लेषण करना मुश्किल हो सकता है अतः अवलोकनों के दस्तावेजीकरण के लिए कई प्रकार के तरीकों की जरूरत होगी।

- एक विचारपरक डायरी/जर्नल/लॉग : यह किसी बच्चे/बच्चों के विकास के बारे में एक लिखित वर्णन होगा जिसमें ध्यान किसी खास व्यवहार पर या फिर विकास के सभी पक्षों पर होगा। इस तरह का लिखित रिकार्ड किसी समयावधि के दौरान बच्चे के विकास को जानने में मदद करता है। हालाँकि यह काफी समय लेता है, पर इससे बहुत गहरी और सूक्ष्म जानकारियाँ हासिल होती हैं। जहाँ एक डायरी किसी भी समय और कहीं भी लिखी जा सकती है, किसी अवलोकन को लिखने का सबसे बढ़िया वक्त तभी होता है जब वह आचरण घटित होता हो।
- ऑडियो (श्रव्य) रिकार्डिंग : बच्चों की मौखिक कुशलताओं का आकलन करने के लिए, बच्चों के आपसी संवादों की ऑडियो रिकार्डिंग की जा सकती है। यह तरीका शिक्षक और बच्चे के बीच या बच्चों के बीच होने वाले संवादों को दर्ज करने और उनका विश्लेषण करने के लिए भी उपयोगी है।
- वीडियो रिकार्डिंग : यह किसी समूह या कक्षा में होने वाले पारस्परिक आचरणों और संवादों को देखने और दर्ज करने के सबसे सटीक तरीकों में से एक है। यद्यपि यह महँगा होता है, पर साथ ही यह सचमुच में घटे वाकयों का दृश्य और श्रव्य रिकार्ड होता है।

- किस्सा रूपी रिकार्ड : किस्से का मतलब किसी महत्त्वपूर्ण विकासात्मक घटना का संक्षिप्त वर्णन होता है। खेलते हुए या काम करते हुए बच्चों के बारे में किस्सा लिखना बच्चे के सीखने से जुड़े अनेक पहलुओं में उनके विकास के स्तर को निरूपित कर सकता हैं। यह बहुत उपयोगी होता है क्योंकि यह किसी परिस्थिति के सन्दर्भ में उनके व्यवहार को दर्ज करता है, लेकिन यह व्यवहार की पूरी तस्वीर नहीं देता।
- मूल्यांकन पैमाना/जाँच सूचियाँ : जाँच सूची जानकारी को दर्ज करने का तेज और आसान तरीका है। जाँच सूची या मूल्यांकन पैमाना ऐसे कौशलों/ क्षमताओं या आचरणों की सूची होती है जो अवलोकन की दृष्टि से जरूरी माने जाते हैं। जब कोई बच्चा किसी खास आचरण को दर्शाता है तो जाँच सूची में उस पर निशान लगा दिया जाता है। अवलोकन के अपरिष्कृत आँकड़ों को जाँच–सूचियों में समाहित किया जा सकता है। इनके द्वारा बहुत से बच्चों के आचरणों की तुलना भी की जा सकती है।
- पोर्टफोलिओ (जानकारी बस्ता) : यह हर बच्चे के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी करने का प्रभावशाली तरीका है। इसमें चुनिन्दा नमूने जैसे चित्र, तस्वीरें, टेप रिकार्डिंग, लेखन के नमूने, शिक्षकों द्वारा रिकार्ड किए गए अवलोकन, जाँच–सूचियाँ, मूल्यांकन पैमाने आदि शामिल रहते हैं। पोर्टफोलिओ के माध्यम से पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों में बच्चे की क्षमताओं की समग्र तस्वीर मिल जाती है।

अवलोकन और बच्चे की निजता

बच्चों के निजता के अधिकार को हर वक्त बनाए रखना जरूरी है। किसी माता–पिता को उनके बच्चे के बारे में रिपोर्ट देते हुए सिर्फ उनके बच्चे की ही चर्चा की जाना चाहिए। इसी प्रकार बच्चों की और उनके समूहों की पहचान को प्रशासकों तथा स्कूल के कर्मचारियों के साथ चर्चाओं में गोपनीय रखना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो लिखित रिपोर्टों से नामों को हटा दिया जाना चाहिए।

References

1. National Council of Educational Research and Training, (2008). Source Book on assessment for classes I-V.
2. Billman, J., & Sherman, J. A. (1997). Observation and participation in early childhood settings- A practicum guide, birth to age five Boston: Allyn and Bacon.
3. McAfee, O., & Leong, D. (1997). Assessing and guiding young children's development and learning (3rd ed.). Boston: Allyn and Bacon.

रेखा शर्मा सेन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) से प्रतिनियुक्ति पर, नई दिल्ली से जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास और शोध केन्द्र में प्रमुख (चेयर) प्राध्यापक हैं। उन्होंने प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, सृजनात्मकता, गुणात्मक शोध पद्धतियों, अक्षमता और लिंगभेद जैसे विषयों पर लेखन किया है। उनसे rekha_s_sen@hotmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

श्रुति भार्गव लर्निंग इम्प्रिंट्स प्राइवेट लिमिटेड, वड़ोदरा में निदेशक हैं। उनकी विशेषज्ञता विशेष बच्चों के क्षेत्र में है जिन्हें विकासात्मक, मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक समस्याओं के लिए, तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा के कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए, विशेष देखरेख और जरूरतों पर आधारित कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है। वे पिछले 18 वर्षों से इस कार्य में सक्रिय रूप से लगी हुई हैं। उनके कार्यक्षेत्र में शिशुओं का आकलन, छोटे बच्चों का आकलन और माता–पिता को परामर्श देना, भाषा, पाठ्यक्रम और शिक्षक प्रशिक्षण शामिल है, जिनमें समस्याओं वाले बच्चों को पहचानने पर जोर होता है। उनसे shrutib20@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी